Duaa Qabool Hone Ke Asbaab (Hindi)

दुआ क़बूल होने के अस्बाब

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

किताब पढ़ने की दुआ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰھُمَّ افْتَحْ عَلَیْنَا حِکْمَتَکَ وَانْشُرْ عَلَیْنَا رَحْمَتَکَ یَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِکْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ! हम पर इल्मो हिक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले ।

(مُستَطرَف ج ۱ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

(अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये)

ता़लिबे ग़मे मदीना व बक़ीअ़ व मग़फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

[अल्लाह]

या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई रिसाला : **दुआ क़बूल होने के अस्बाब** के **28** सफ़ह़ात पढ़ या सुन ले उस को अपने ख़ौफ़ और अपने प्यारे ह़बीब (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के इश्क़ में रोने वाली आंखें अ़त़ा फ़रमा।

آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلم

अल मौत

صلوا علی الحبیب! صلی اللہ علی محمد

1 जुमादल अव्वल 1441 हि.

27-12-19

नाम किताब	**: दुआ क़बूल होने के अस्बाब**
सिने त़बाअ़त	: रमज़ान **1441** सि.हि.
नाशिर	: मक-त-बतुल मदीना

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं।

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक-त-बतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

दुआ क़बूल होने के अस्बाब

फ़स्ले अव्वल फ़ज़ाइले दुआ में

قال الرضاء : फ़ज़ाइले दुआ में अहादीस ब कसरत हैं, दस[10] इस फ़स्ल में मज़्कूर होंगी आयन्दा भी ज़िम्ने कलाम में बहुत अहादीस आएंगी। ﴿وَاللّٰهُ الْمُوَفِّقُ﴾[1]

قال اللّٰه عَزَّوَجَلَّ:

﴿اُجِيْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ﴾

"मैं दुआ मांगने वाले की दुआ क़बूल करता हूं जब वोह मुझे पुकारे।"

(پ۲، البقرة: ۱۸۶)

और फ़रमाता है :

﴿اُدْعُوْنِيْٓ اَسْتَجِبْ لَكُمْ﴾

"मुझ से दुआ मांगो मैं क़बूल फ़रमाऊंगा।" (پ۲۴، المؤمن: ٦٠)

﴿اِنَّ الَّذِيْنَ يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِيْ سَيَدْخُلُوْنَ جَهَنَّمَ دٰخِرِيْنَ﴾

"जो लोग मेरी इबादत से तकब्बुर करते हैं अन्क़रीब जहन्नम में जाएंगे ज़लील हो कर।" (پ۲۴، المؤمن: ٦٠)

यहां इबादत से मुराद दुआ है।

قال الرضاء : और फ़रमाता है :

﴿فَلَوْلَآ اِذْ جَآءَهُمْ بَاْسُنَا تَضَرَّعُوْا وَلٰكِنْ قَسَتْ قُلُوْبُهُمْ﴾

1 और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही तौफ़ीक़ देने वाला है।

''तो क्यूं न हुवा जब आई थी उन पर हमारी त़रफ़ से सख़्ती तो गिड़-गिड़ाए होते लेकिन सख़्त हो गए हैं दिल उन के।'' (پ٧، الأنعام: ٤٣)

इस आयत से तर्के दुआ़ पर तहदीदे शदीद निकली।[1]

ह़दीस 1 : रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है[2] :

''मैं अपने बन्दे के गुमान के पास हूं।'' या'नी वोह जैसा गुमान मुझ से रखता है मैं उस से वैसा ही करता हूं, ((وَأَنَا مَعَهُ إِذَا دَعَانِيْ)) ''और मैं उस के साथ हूं जब मुझ से दुआ़ करे।''

قال الرضاء : येह ह़दीस बुख़ारी व मुस्लिम व तिरमिज़ी व नसाई व इब्ने माजह ने अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत की।[3]

أقــول : अल्लाह तआ़ला का इ़ल्म व क़ुदरत से साथ होना तो हर शै के लिये है, येह ख़ास मइ़य्यते करम व रह़मत है, जो दुआ़ करने वाले को मिलती है। इस से ज़ियादा क्या दौलत व ने'मत होगी

---

1. या'नी इस आयते मुबा-रका में दुआ़ के छोड़ देने पर शदीद ख़ौफ़ दिलाया जा रहा है।

2. **ह़दीसे क़ुदसी :** هو ما نقل إلينا عن النبي صلّى الله عليه وسلم مع إسناده إيّاه إلى ربّه عزّوجلّ. ("تيسير مصطلح الحديث"، الباب الأول، الفصل الرابع، ص١٢٦)

या'नी ह़दीसे क़ुदसी वोह ह़दीस है जिस के रावी हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم हों और निस्बत अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ हो।

3. "صحيح مسلم"، كتاب الذكر والدعاء... إلخ، باب فضل الذكر والدعاء... إلخ، الحديث: ٢٦٧٥، ص١٤٤٢.

कि बन्दा अपने मौला की मइय्यत से मुशर्रफ़ हो हज़ार ह़ाजत रवाइयां इस पर निसार और लाख मक़्सद व मुराद इस के तसद्दुक़। ﴾[1]

ह़दीस 2 : फ़रमाते हैं صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم **:**

''अल्लाह तआ़ला के नज़्दीक कोई चीज़ दुआ़ से बुज़ुर्ग तर नहीं।''[2]

قال الرضاء : इसे तिरमिज़ी व इब्ने माजह व इब्ने ह़ब्बान व ह़ाकिम ने उन्हीं सह़ाबी (या'नी ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ) से रिवायत किया। ﴿

ह़दीस 3 : नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم अपने रब तबा-र-क व तआ़ला से नक़्ल फ़रमाते हैं **:**

''ऐ फ़रज़न्दे आदम ! तू जब तक मुझ से दुआ़ करता और मेरा उम्मीद वार रहेगा, मैं तेरे गुनाह कैसे ही हों मुआ़फ़ फ़रमाता रहूंगा और मुझे कुछ परवाह नहीं।''

قال الرضاء:رواه الترمذي عن أنس بن مالک رضي الله تعالى عنه. ﴾[3]

---

1 या'नी : अल्लाह तआ़ला अपनी सिफ़ते इल्म व क़ुदरत से तो हर चीज़ के साथ है, लेकिन उस का वोह ख़ास क़ुर्ब, जो दुआ़ करने वाले को मिलता है, इतनी बड़ी ने'मत व सआ़दत है कि अगर इस ने'मत पर बन्दे की हज़ारों मक़्बूल दुआ़एं और मुरादें भी क़ुरबान हो जाएं तो कम हैं।

2 "سنن الترمذي"، كتاب الدعوات، باب ماجاء في فضل الدعاء، الحديث: ٣٣٨١، ج٥، ص٢٤٣.

3 इस ह़दीस को इमाम तिरमिज़ी ने ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत किया। "سنن الترمذي"، كتاب الدعوات، باب في فضل التوبة ... إلخ، الحديث: ٣٥٥١، ج٥، ص٣١٨-٣١٩.

ह़दीस 4 : फ़रमाते हैं صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم :

''दुआ से आजिज़ न हो कि कोई शख़्स दुआ के साथ हलाक न होगा।''

قال الرضاء: رواه عنه ابن حبّان والحاكم﴾.[1]

ह़दीस 5 : फ़रमाते हैं صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم :

''दुआ मुसल्मानों का हथियार है और दीन का सुतून और आस्मान व ज़मीन का नूर।''

قال الرضاء: رواه الحاكم عن أبي هريرة وكأبي يعلى عن علي رضي الله تعالى عنهما.﴾[2]

ह़दीस 6 : मन्क़ूल कि फ़रमाते हैं صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم :

''जो बला उतर चुकी और जो अभी न उतरी, दुआ सब से नफ़्अ़ देती है, तो दुआ इख़्तियार करो ऐ ख़ुदा के बन्दो!''

قال الرضاء: رواه الترمذي والحاكم عن ابن عمر رضي الله تعالى عنهما.﴾[3]

---

1 इस ह़दीस को इब्ने ह़ब्बान और ह़ाकिम ने ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत किया। "المستدرك"، كتاب الدعاء والتكبير... إلخ، الحديث: ١٨٦١، ج٢، ص١٦٤.

2 इस ह़दीस को ह़ाकिम ने ह़ज़रते अबू हुरैरा और इसी की मिस्ल अबू या'ला ने ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत किया।

"المستدرك"، كتاب الدعاء والتكبير... إلخ، الحديث: ١٨٥٥، ج٢، ص١٦٢.

3 इस ह़दीस को इमाम तिरमिज़ी और ह़ाकिम ने ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत किया।

"سنن الترمذي"، باب في دعاء النبي... إلخ، الحديث: ٣٥٥٩، ج٥، ص٣٢٢.

ह़दीस 7 : वारिद कि फ़रमाते हैं صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم **:**

''बला उतरती है फिर दुआ़ उस से जा मिलती है तो दोनों कुश्ती लड़ते रहते हैं क़ियामत तक।''

या'नी दुआ़ उस बला को उतरने नहीं देती।

قال الرضاء: رواه البزّار والطبراني والحاكم عن أمّ المؤمنين رضي اللّٰه تعالى عنها. ﴾[1]

ह़दीस 8 : मरवी कि फ़रमाते हैं صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم **:**

''दुआ़ इ़बादत का मग़्ज़ है।''

قال الرضاء: رواه الترمذي عن أنس رضي اللّٰه تعالى عنه. ﴾[2]

ह़दीस 9 : मज़्कूर कि फ़रमाते हैं صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم **:**

''क्या मैं तुम्हें वोह चीज़ न बताऊं जो तुम्हें तुम्हारे दुश्मन से नजात दे और तुम्हारे रिज़्क़ वसीअ़ कर दे, रात दिन अल्लाह तआ़ला से दुआ़ मांगते रहो कि दुआ़ सलाहे़ मोमिन (या'नी मोमिन का हथियार) है।''

---

1 इस ह़दीस को बज़्ज़ार, त़-बरानी और ह़ाकिम ने उम्मुल मुअमिनीन सय्यिदह आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا से रिवायत किया।

"المستدرك"، كتاب الدعاء والتكبير... إلخ، الحديث: ١٨٥٦، ج٢، ص١٦٢.

2 इस ह़दीस को इमाम तिरमिज़ी ने ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत किया।

"سنن الترمذي"، باب ما جاء في فضل الدعاء، الحديث: ٣٣٨٢، ج٥، ص٢٤٣.

قال الرضاء: رواه أبـو يـعلى عن جابر بن عبد الله رضـي الله تعالى عنهما.[1]

ह़दीस 10 : फ़रमाते हैं صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم **:**

''जो अल्लाह तआ़ला से दुआ़ न करे, अल्लाह तआ़ला उस पर ग़ज़ब फ़रमाए।''

قال الرضاء: أخـرجـه أحمد وابن أبي شيبة والبخاري في "الأدب المفرد" والترمذي وابن ماجه والحاكم عن أبي هريرة رضي الله تعالى عنه.[2]

और येह मा'ना बा'ज़ अह़ादीसे क़ुदसी में भी आए।

أخـرجـه الـعسكري في "المواعظ" عنه عن النبي صـلى الله تعالى عليه وسلم قال: ((قال الله تعالى: من لا يدعوني أغضب عليه)).

या'नी : अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है : ''जो मुझ से दुआ़ न करेगा मैं उस पर ग़ज़ब फ़रमाऊंगा।''[3] **العِياذ بالله تعالى.**

---

1 इस ह़दीस को अबू या'ला ने ह़ज़रते जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत किया। "مسند أبي يعلى"، الحديث: ١٨٠٦، ج٢، ص٢٠١-٢٠٢.

2 इस ह़दीस को इमाम अह़मद व इब्ने अबी शैबा, और इमाम बुख़ारी ने ''अल अ-दबुल मुफ़्रद'' में और इमाम तिरमिज़ी व इब्ने माजह और ह़ाकिम ने ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत किया।

"المستدرك"، كتاب الدعاء والتكبير... إلخ، الحديث: ١٨٤٩، ج٢، ص١٦٠.

3 "كـنـز الـعـمـال"، الباب الثامن، الفصل الأول، الحديث: ٣١٢٤، الجزء الثاني، ج١، ص٢٩، (بحوالہ "مواعظ").

ऐ अ़ज़ीज़ ! दुआ एक अ़जीब ने'मत और उ़म्दा दौलत है कि परवर्दगार تَبَارَكَ وَتَعَالٰى (पाक और बुलन्दो बाला) ने अपने बन्दों को करामत फ़रमाई और उन को ता'लीम की, ह़ल्ले मुश्किलात में इस से ज़ियादा कोई चीज़ मुअस्सिर नहीं, और दफ़्ए़ बला व आफ़त में कोई बात इस से बेहतर नहीं ।(1)

एक दुआ़ से आदमी को **पांच फ़ाएदे** ह़ासिल होते हैं :

अव्वल : आ़बिदों के गुरौह में दाख़िल होता है कि दुआ़ फ़ी नफ़्सिही (या'नी बज़ाते ख़ुद) इ़बादत बल्कि सर्रे इ़बादत (या'नी इ़बादत का मग़्ज़) है ।

दुवुम : वोह इक़्रारे इ़ज्ज़ो नियाज़े[1] दाई व ए'तिराफ़ ब क़ुदरत व करमे इलाही पर दलालत करती है ।

सिवुम : इम्तिसाले अम्रे शर-अ़, कि शारेअ़ ने उस पर ताकीद फ़रमाई, न मांगने पर ग़-ज़बे इलाही की वईद आई ।(2)

---

❶ मुश्किलात को ह़ल करने में दुआ़ से ज़ियादा असर करने वाली और आफ़ात व बलिय्यात को टालने में दुआ़ से ज़ियादा बेहतरीन कोई चीज़ नहीं ।

1. या'नी जो शख़्स दुआ़ करता है वोह अपने इ़ज्ज़ व एह़तियाज का इक़्रार और अपने परवर्दगार के करम व क़ुदरत का ए'तिराफ़ करता है । منہ ۱۲

❷ या'नी : दुआ़ मांगना शरीअ़ते मुत़ह्हरा के ह़ुक्म की बजा आ-वरी है कि अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त جَلَّ وَعَلَا ने फ़रमाया : ﴿اُدْعُوْنِیْٓ اَسْتَجِبْ لَكُمْ﴾ (پ۲۴، المؤمن:۶۰) ''मुझ से दुआ़ करो मैं क़बूल करूंगा'' और दुआ़ न मांगने वाले के बारे में अ़ज़ाब की वईद है जैसा कि ह़दीसे पाक में आया : ''जो मुझ से दुआ़ न करेगा मैं उस पर ग़ज़ब फ़रमाऊंगा ।''

चहारुम : इत्तिबाए सुन्नत कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم अक्सर अवक़ात दुआ मांगते और औरों को भी ताकीद फ़रमाते ।[1]

पन्जुम : दफ़्ए बला व हुसूले मुद्दआ (बला टलने और मुराद पूरी होने) कि ब हुक्मे [2] ﴿اُجِيْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ﴾ व [3] ﴿اُدْعُوْنِيْٓ اَسْتَجِبْ لَكُمْ﴾

आदमी अगर बला से पनाह चाहता है ख़ुदाए तआ़ला पनाह देता है और जो वोह किसी बात की त़लब करता है अपनी रह़मत से उस को अ़त़ा फ़रमाता है या आख़िरत में सवाब बख़्शता है ।

सरवरे मा'सूम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से रिवायत है :

''दुआ बन्दे की तीन बातों से ख़ाली नहीं होती :

(1) या उस का गुनाह बख़्शा जाता है

(2) या दुन्या में उसे फ़ाएदा ह़ासिल होता है

(3) या उस के लिये आख़िरत में भलाई जम्अ़ की जाती है कि जब बन्दा अपनी उन दुआ़ओं का सवाब देखेगा जो दुन्या में मुस्तजाब

---

1 कि दुआ से आफ़ात व बलिय्यात दूर होती हैं और मक़्सूद ह़ासिल होता है ।

2 तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ''मुझ से दुआ करो मैं क़बूल करूंगा ।'' (پ٢٤، المؤمن: ٦٠)

3 तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ''दुआ क़बूल करता हूं पुकारने वाले की जब मुझे पुकारे ।'' (پ٢، البقرة: ١٨٦).

(क़बूल) न हुई थीं तमन्ना करेगा : काश ! दुन्या में मेरी कोई दुआ क़बूल न होती और सब यहीं के वासिते जम्अ रहतीं ।''(1)

मगर ऐसे शख़्स को, कि अपनी दुआ का क़बूल होना और ब सूरते अ़-दमे हुसूले मुद्दआ सवाबे आख़िरत उस के इवज़ मिलना चाहता है, मुनासिब कि दुआ में इस के आदाब की रिआयत करे ।(2) وَاللّٰهُ الْمُوَفِّقُ.
(और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही तौफ़ीक़ देने वाला है)

अल्लाह

''हुब्बे जाह तबाह कुन है ।''

अल मौत

9 रबीउ़ल अव्वल 1440 हि.
18-11-18

---

❶ "سنن الترمذي"، كتاب الدعوات، باب في جامع الدعوات ... إلخ، الحديث: ٣٤٩٠، ج٥، ص٢٩٢.

❷ या'नी जो शख़्स येह चाहता है कि उस की दुआ क़बूल हो जाए या इस के इवज़ आख़िरत में सवाब का ख़ज़ाना हाथ आए, तो उसे चाहिये कि दुआ में आदाबे दुआ को मल्हूज़े ख़ातिर रखे ।

फ़स्ले दुवुम आदाबे दुआ व अस्बाबे इजाबत में

قال الرضاء : आदाबे दुआ जिस क़दर हैं, सब अस्बाबे इजाबत हैं कि इन का इज्तिमाअ़ اِنْ شَآءَاللّٰهُ الْعَزِيْز मूरिसे इजाबत होता है, बल्कि इन में बा'ज़ ब मन्ज़िलए शर्त़ हैं जैसे : हुज़ूरे क़ल्ब व सलाते अ़लन्नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم और बा'ज़ दीगर मुह़-सनात व मुस्तह़-सनात ।[1]

ثم أقول : यहां कोई अदब ऐसा नहीं जिसे ह़क़ीक़तन शर्त़ कहिये, ब ई मा'ना कि इजाबत उस पर मौक़ूफ़ हो, कि अगर वोह न हो तो इजाबत ज़िन्हार न हो ।[2] अब येह हुज़ूरे क़ल्ब ही है जिस की निस्बत खु़द ह़दीस में इर्शाद हुवा :

((واعلموا أنّ اللّٰه لا يستجيب دعاءً من قلب غافل لاهٍ))[3]

"ख़बरदार हो ! बेशक अल्लाह तआला दुआ क़बूल नहीं फ़रमाता किसी ग़ाफ़िल खेलने वाले दिल की ।"

ह़ालां कि बारहा सोते में जो मह़्ज़ बिला क़स्द ज़ुबान से निकल

---

1. जितने भी आदाबे दुआ हैं वोह सब क़बूलिय्यत का सबब हैं अगर दुआ में इन को जम्अ़ कर लिया जाए तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दुआ की क़बूलिय्यत का बाइस होंगे बल्कि बा'ज़ आदाब ऐसे हैं कि जो दुआ में शर्त़ की ह़ैसिय्यत रखते हैं जैसे : यक्सूई के साथ दुआ करना, सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم पर दुरूद शरीफ़ पढ़ना और दीगर नेक उमूर बजा ला कर दुआ करना ।

2. बहर ह़ाल यहां शर्त़ अपने ह़क़ीक़ी मा'ना में नहीं है कि अगर वोह न पाई जाए तो दुआ हरगिज़ क़बूल ही न हो ।

3. "سنن الترمذي"، كتاب الدعوات، باب ماجاء في جامع الدعوات ... إلخ، الحديث: ٣٤٩٠، ج٥، ص٢٩٢.
و"المستدرك"، كتاب الدعاء والتكبير... إلخ، الحديث: ١٨٦٠، ج٢، ص١٦٤.

जाए मक़्बूल हो जाता है व लिहाज़ा ह़दीसे सह़ीह़[1] में इर्शाद हुवा : ''जब नींद ग़-लबा करे तो ज़िक्र व नमाज़ मुल्तवी कर दो, मबादा (कहीं ऐसा न हो कि) करना चाहो इस्तिग़्फ़ार और नींद में निकल जाए कोसना।''[2]

तो साबित हुवा कि यहां शर्त़ ब मा'निये ह़क़ीक़ी नहीं, बल्कि येह मक़्सूद कि इन शराइत़ का इज्तिमाअ़ हो तो वोह दुआ़ बर वज्हए कमाल है और इस में तवक़्क़ोए़ इजाबत को निहायत क़ुव्वत ख़ुसूसन जब कि मुह़-सनात को भी जामेअ़ हो, और अगर शराइत़ से ख़ाली हो तो फ़ी नफ़्सिही वोह रिजाए क़बूल नहीं, ब महज़ करम व रह़मत या तवाफ़िक़े साअ़ते इजाबत, क़बूल हो जाना दूसरी बात है[3] येह फ़ाएदा ज़रूर मुला-ह़ज़ा रखिये। अब शुमारे आदाब की त़रफ़ चलिये।

---

❶ **ह़दीसे सह़ीह़ : ما اتّصل سنده بنقل العدل الضابط عن مثله إلى منتهاه من غير شذوذ ولا علة.**

("تيسير مصطلح الحديث"، الباب الأول، الفصل الثاني، ص٣٣)

या'नी : ''वोह ह़दीस जिस के तमाम रावी आ़दिल और ताम्मुज़्ज़ब़्त़ हों, उस की सनद इब्तिदा से इन्तिहा तक मुत्तसिल हो नीज़ वोह ह़दीस इल्लते ख़फ़िय्या क़ादिह़ा और शज़ूज़ से भी मह़फ़ूज़ हो।''

❷ "صحيح البخاري"، كتاب الوضوء، باب الوضوء من النوم ... إلخ، الحديث: ٢١٢، ج١، ص٩٤.

و"سنن الترمذي"، كتاب الصلاة، باب ما جاء في الصلاة عند النعاس، الحديث: ٣٥٥، ج١، ص٣٧٢.

❸ बहर ह़ाल येह बात साबित हुई कि यहां शराइत़ अपने ह़क़ीक़ी मा'नों में नहीं कि इन शराइत़ के बिग़ैर दुआ़ क़बूल ही न हो, हां ! इतना ज़रूर है कि अगर येह शराइत़ दुआ़ में जम्अ़ हो जाएं तो दुआ़ कामिल है और इस में क़बूलिय्यत का इम्कान क़वी, बिल ख़ुसूस जब कि वोह दीगर नेक उमूर को भी शामिल हो, इस के बर अ़क्स अगर दुआ़ शराइत़ व आदाब से ख़ाली हो तो उस की क़बूलिय्यत की उम्मीद नहीं, हां अलबत्ता करम व रह़मते इलाही हो जाए या दुआ़ की क़बूलिय्यत की घड़ी हो और दुआ़ क़बूल हो जाए तो और बात है।

आदाबे दुआ कि आयात व अहादीसे सहीहा मोअ़-त-बरा व इर्शादाते उ़-लमाए किराम से साबित, जिन की रिआ़यत اِنْ شَآءَ اللّٰه تَعَالٰی ज़रूर बाइ़से इजाबत (क़बूलिय्यत का सबब) हो।

قال الرضاء : वोह साठ[60] हैं। इकावन[51] ह़ज़रते मुसन्निफ़े अ़ल्लाम قُدِّسَ سِرُّهٗ ने ज़िक्र फ़रमाए और नव[9] फ़क़ीर غَفَرَاللّٰهُ تَعَالٰی لَهٗ ने बढ़ाए।❶

अदब 1 : दिल को ह़त्तल इम्कान ख़यालाते ग़ैर (दूसरों के ख़यालात) से पाक करे।

قال الرضاء : रब عَزَّوَجَلَّ का ख़ास मह़ल्ले नज़र (ख़ास नज़रे करम फ़रमाने की जगह) दिल है।

((إنّ اللّٰه لا ينظر إلى صوركم وأموالكم ولكن ينظر إلى قلوبكم وأعمالكم.))❷[1]

अदब 2, 3, 4 : बदन व लिबास व मकान, पाक व नज़ीफ़ व त़ाहिर हों।

قال الرضاء : कि अल्लाह तआ़ला नज़ीफ़ है, नज़ाफ़त को दोस्त रखता है।❶

अदब 5 : दुआ़ से पहले कोई अ़-मले सालेह़ करे कि ख़ुदाए करीम की रह़मत उस की त़रफ़ मु-तवज्जेह हो।

قال الرضاء : स-दक़ा, ख़ुसूसन पोशीदा, इस अम्र में अ-सरे तमाम रखता है (या'नी दुआ़ की क़बूलिय्यत में बहुत मुअस्सिर है)

---

❶ "बेशक अल्लाह तुम्हारी सूरतों और तुम्हारे मालों की त़रफ़ नहीं देखता, अलबत्ता वोह तुम्हारे दिलों और आ'माल को देखता है।"

❷ "صحيح مسلم"، كتاب البرّ والصلة والآداب، باب تحريم ظلم المسلم... إلخ، الحديث: ٢٥٦٤، ص١٣٨٧.

﴿قَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَىْ نَجْوٰىكُمْ صَدَقَةً﴾[1] वुजूब अगर मन्सूख़ है, तो इस्तिह्बाब हनूज़ बाक़ी है।﴾[2]

अदब 6 : जिन के हुक़ूक़ इस के ज़िम्मे हों, अदा करे या उन से मुआ़फ़ करा ले।

قال الرضاء : ख़ल्क़ (या'नी बन्दों) के मुत़ा-लबात गरदन पर ले कर दुआ़ के लिये हाथ उठाना ऐसा है जैसे कोई शख़्स बादशाह के हुज़ूर भीक मांगने जाए और ह़ालत येह हो कि चार त़रफ़ से लोग उसे चिमटे दाद व फ़रियाद का शोर कर रहे हैं, उसे गाली दी, उसे मारा, उस का माल ले लिया, उसे लूटा, ग़ौर करे उस का येह ह़ाल क़ाबिले अ़त़ा व नवाल है या लाइक़े सज़ा व नकाल, ﴿وحسبنا الله ذو الجلال.[3]

अदब 7 : खाने पीने लिबास व कस्ब में ह़राम से एह़तियात़ करे कि ह़राम ख़्वार व ह़राम कार (ह़राम खाने वाले और ह़राम काम करने वाले) की दुआ़ अक्सर रद होती है।

---

❶ तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : "अपनी अ़र्ज़ से पहले कुछ स-दक़ा दे लो।" (پ۲۸، المجادلة:۱۲)

❷ आयते करीमा में "قَدِّمُوْا" के सीग़ए अम्र के सबब इस आयते करीमा से साबित हुवा कि दुआ़ से पहले स-दक़ा करना वाजिब है मगर चूंकि इस आयते करीमा से साबित शुदा हुक्म मन्सूख़ हो चुका है चुनान्चे वाजिब तो नहीं अलबत्ता अब भी मुस्तह़ब ज़रूर है।

("التفسير الكبير"، المجادلة، تحت الآية: ۱۲، الجزء التاسع والعشرون، ج۱۰، ص٤٩٥).

❸ या'नी वोह शख़्स जो बादशाह के हुज़ूर ह़ाज़िर हो कर फ़रियाद कर रहा है और ह़ालत येह है कि उस ने किसी का माल लूटा किसी को गाली दी, आया वोह इन्आ़म दिये जाने और मेह्रबानी किये जाने का मुस्तह़िक़ है या सज़ा दिये जाने का ! और अल्लाह तआ़ला अ़-ज़मत वाला हमें काफ़ी है।

अदब 8 : दुआ से पहले गुज़श्ता गुनाहों से तौबा करे।

قال الرضاء : कि ना फ़रमानी पर क़ाइम रह कर अ़ता मांगना बे हयाई है।

अदब 9 : वक़्ते कराहत न हो तो दो रक्अ़त नमाज़ ख़ुलूसे क़ल्ब से पढ़े कि जालिबे रह़मत है और रह़मत, मूजिबे ने'मत।[1]

---

1 या'नी अगर मक्रूह वक़्त न हो तो दुआ से पहले इख़्लास के साथ दो रक्अ़त नफ़्ल नमाज़ पढ़े कि रह़मते इलाही عَزَّوَجَلَّ का सबब है, और रह़मत, ने'मते इलाही के ह़ुसूल का बाइ़स है।

बारह वक़्तों में नवाफ़िल पढ़ना मन्अ़ है :

(1) तुलूए़ फ़ज्र से तुलूए़ आफ़्ताब तक कि इस दरमियान में सिवा दो रक्अ़त सुन्नते फ़ज्र के कोई नफ़्ल नमाज़ जाइज़ नहीं।

(2) अपने मज़हब की जमाअ़त के लिये इक़ामत हुई तो इक़ामत से ख़त्मे जमाअ़त तक नफ़्ल व सुन्नत पढ़ना मक्रूहे तह़रीमी है, अलबत्ता अगर नमाज़े फ़ज्र क़ाइम हो चुकी और जानता है कि सुन्नत पढ़ेगा जब भी जमाअ़त मिल जाएगी अगर्चे क़ा'दह में शिर्कत होगी, तो ह़ुक्म है कि जमाअ़त से अलग और दूर सुन्नते फ़ज्र पढ़ कर शरीके जमाअ़त हो और जो जानता है कि सुन्नत में मश्ग़ूल होगा तो जमाअ़त जाती रहेगी और सुन्नत के ख़याल से जमाअ़त तर्क की येह ना जाइज़ व गुनाह है और बाक़ी नमाज़ों में अगर्चे जमाअ़त मिलना मा'लूम हो सुन्नतें पढ़ना जाइज़ नहीं।

(3) नमाज़े अ़स्र से आफ़्ताब ज़र्द होने तक नफ़्ल मन्अ़ है, नफ़्ल नमाज़ शुरूअ़ कर के तोड़ दी थी उस की क़ज़ा भी इस वक़्त में मन्अ़ है और पढ़ ली तो ना काफ़ी है, क़ज़ा उस के ज़िम्मे से साक़ित न हुई।

(4) ग़ुरूबे आफ़्ताब से फ़र्ज़े मग़रिब तक। मगर इमाम इब्नुल हुमाम ने दो रक्अ़त ख़फ़ीफ़ का इस्तिस्ना फ़रमाया।

(5) जिस वक़्त इमाम अपनी जगह से ख़ुत्बए जुमुआ़ के लिये खड़ा हुवा उस वक़्त से फ़र्ज़े जुमुआ़ ख़त्म होने तक नमाज़े नफ़्ल मक्रूह है, यहां तक कि जुमुआ़ की सुन्नतें भी। =

अदब 10, 11, 12 : दुआ के वक़्त बा वुज़ू क़िब्ला रू, मुअद्दब (बा अदब) दो ज़ानू बैठे या घुटनों के बल खड़ा हो।

قال الرضاء : या ब निय्यते शुक्रे तौफ़ीफ़े दुआ व इल्तिजाए इलल्लाह, सज्दा करे कि येह सूरत सब से ज़ियादा क़ुर्बे रब की है, قاله رسول الله صلّى الله عليه وآله وسلّم.[1]

= (6) ऐन ख़ुत्बे के वक़्त अगर्चे पहला हो या दूसरा और जुमुआ का हो या ख़ुत्बए ईदैन या कुसूफ़ व इस्तिस्क़ा व ह़ज व निकाह़ का हो हर नमाज़ ह़त्ता कि क़ज़ा भी ना जाइज़ है, मगर साह़िबे तरतीब के लिये ख़ुत्बए जुमुआ के वक़्त क़ज़ा की इजाज़त है।

(7) नमाज़े ईदैन से पेश्तर नफ़्ल मक्रूह है, ख़्वाह घर में पढ़े या ईदगाह व मस्जिद में।

(8) नमाज़े ईदैन के बा'द नफ़्ल मक्रूह है, जब कि ईदगाह या मस्जिद में पढ़े, घर में पढ़ना मक्रूह नहीं।

(9) अ़-रफ़ात में जो ज़ोहर व अ़स्र मिला कर पढ़ते हैं, उन के दरमियान में और बा'द में भी नफ़्ल व सुन्नत मक्रूह है।

(10) मुज़्दलिफ़ा में जो मग़रिब व इशा जम्अ़ किये जाते हैं, फ़क़त़ उन के दरमियान में नफ़्ल व सुन्नत पढ़ना मक्रूह है, बा'द में मक्रूह नहीं।

(11) फ़र्ज़ का वक़्त तंग हो तो हर नमाज़ यहां तक कि सुन्नते फ़ज्र व ज़ोहर मक्रूह है।

(12) जिस बात से दिल बटे और दफ़्अ़ कर सकता हो उसे बे दफ़्अ़ किये हर नमाज़ मक्रूह है म-सलन पाख़ाने या पेशाब या रियाह़ का ग़-लबा हो मगर जब वक़्त जाता हो तो पढ़ ले फिर फेरे। यूहीं खाना सामने आ गया और उस की ख़्वाहिश हो ग़रज़ कोई ऐसा अम्र दरपेश हो जिस से दिल बटे ख़ुशूअ़ में फ़र्क़ आए उन वक़्तों में भी नमाज़ पढ़ना मक्रूह है। (माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअ़त, जिल्द : 1, ह़िस्सए सिवुम, स. 455, 457)

❶ या'नी : अल्लाह तआ़ला की बारगाह में दुआ व इल्तिजा करने की तौफ़ीक़ मिलने पर, सज्दए शुक्र की निय्यत से सज्दा करे कि बन्दा सज्दे में सब से ज़ियादा अपने रब के क़रीब होता है, जैसा कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "बन्दा इस से ज़ियादा कभी अपने रब से क़रीब नहीं होता, तो सज्दे में दुआ ज़ियादा मांगो।"

وقيّدنا بنية الشكر؛ لأنَّ السجود بلا سبب حرام عند الشافعيّة وليس بشيء عندنا إنّما هو مباح لا لك ولا عليك كما نصّوا عليه.﴾[1]

अदब 13, 14 : आ'ज़ा को ख़ाशेअ़ और दिल को ह़ाज़िर करे।[2]

ह़दीस में है : "अल्लाह तआ़ला ग़ाफ़िल दिल की दुआ़ नहीं सुनता।"[3]

ऐ अ़ज़ीज़ ! हैफ़ (अफ़्सोस) है कि ज़ुबान से उस की क़ुदरत व करम का इक़्रार कीजिये और दिल औरों की अ़-ज़मत और बड़ाई से पुर हो। बनी इस्राईल ने अपने पैग़म्बर से शिकायत की, कि हमारी दुआ़ क़बूल नहीं होती जवाब आया : मैं उन की दुआ़ किस त़रह़ क़बूल करूं कि वोह ज़ुबान से दुआ़ करते हैं और दिल उन के ग़ैरों की त़रफ़ मु-तवज्जेह रहते हैं।[4]

---

1 हम ने शुक्र की निय्यत के साथ सज्दे को इस लिये ख़ास किया कि बिग़ैर किसी सबब के सज्दा करना शाफ़िइ़य्यों के नज़्दीक ह़राम और हम ह़-नफ़िय्यों के नज़्दीक मह़ज़ मुबाह़ या'नी जाइज़ है, कि इस के करने या न करने पर न सवाब न अ़ज़ाब जैसा कि उ़-लमाए किराम ने इस पर नुसूस बयान फ़रमाई।

انظر" ردّ المحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، مطلب في سجود التلاوة، ج٢، ص٧٢٠.
و"الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثالث عشر، ج١، ص١٣٦.

2 या'नी : ज़ाहिर बदन से आ़जिज़ी व इन्किसारी का इज़्हार हो और दिल ह़ाज़िर हो।

3 "سنن الترمذي"، كتاب الدعوات، باب في جامع الدعوات... إلخ، الحديث: ٣٤٩٠، ج٥، ص٢٩٢.

4 "روح البيان"، پ٨، الأعراف، تحت الآية: ٥٦، ج٣، ص١٧٨.
و"الرسالة القشيرية"، باب الدعاء، ص٢٩٩.

ऐ अ़ज़ीज़ ! जब तक तू दिल से अपनी और तमाम ख़ल्क़ की हस्ती, ख़ुदाए तआ़ला की हस्ती में गुम न करे, रह़मते ख़ास्सा कि अज़ल से मुख़्लिसों के लिये मख़्सूस है, तेरी त़रफ़ कब मु-तवज्जेह हो । जो शख़्स जब्बार बादशाह के हुज़ूर अपनी बड़ाई और अ़-ज़मत का दा'वा करे या बादशाह उस की त़रफ़ मु-तवज्जेह हो और वोह किसी चूबदार (नोकर) या अहल कार की त़रफ़ नज़र रखे सज़ावारे ज़ज्र है (या'नी मलामत के लाइक़ है), न कि मुस्तह़िक़े इन्आ़म (या'नी इन्आ़म का मुस्तह़िक़) ।

एक दिन ह़ज़रत ख़्वाजा सुफ़्यान सौरी قُدِّسَ سِرُّهٗ नमाज़ पढ़ाते थे, जब इस आयत पर पहुंचे ﴿اِیَّاکَ نَعْبُدُ وَاِیَّاکَ نَسْتَعِیْنُ﴾ "तुझी को हम पूजते हैं और तुझी से हम मदद चाहते हैं", रोते रोते बेहोश हो गए, जब होश में आए, लोगों ने ह़ाल पूछा फ़रमाया : उस वक़्त मुझे येह ख़याल आया कि अगर ग़ैब से निदा हो : ऐ काज़िब ख़मोश ! क्या हमारी ही सरकार तुझे झूट बोलने के लिये रह गई, रात दिन रिज़्क़ की तलाश में कू ब कू (दर बदर) फिरता है और बीमारी के वक़्त त़बीबों से इल्तिजा करता है और हम से कहता है मैं तुझी को पूजता हूं और तुझी से मदद चाहता हूं, तो मैं इस बात का क्या जवाब दूं ?(1)

ऐ अ़ज़ीज़ ! वहां दिल पर नज़र है न कि ज़ुबान पर

ما زباں را ننگریم وقال را
ما دراں را بنگریم وحال را(2)

---

1 "روح البیان"، پ۱، الفاتحۃ، تحت الآیۃ: ۵، ج۱، ص۲۰.

2 *ज़बानो क़ाल की जानिब कभी होती नहीं माइल*
मेरी रह़मत दिले ख़स्ता तुम्हारी ही त़रफ़ माइल

चाहिये कि दिल व ज़ुबान को मुवाफ़िक़ और ज़ाहिर व बातिन को मुताबिक़ और जमीअ़ मा सिवाए अल्लाह से रिश्तए उम्मीद क़त्अ़ करे न नफ़्स से काम, न ख़ल्क़ से ग़रज़ रखे, ता शाहिदे मक़्सूद जल्वा गर हो और गौहरे मक़्सद हाथ आए ।(1)

قال الرضاء : नज़र ब ग़ैर, जब बिज़्ज़ात नज़र ब ग़ैर हो नज़र ब ग़ैर है बल्कि ह़क़ीक़तन मा'ना बिज़्ज़ात मक़्सूद व मुराद हों तो क़त्अ़न शिर्क व कुफ़्र ।(2)

मह़बूबाने[1] ख़ुदा से तवस्सुल, नज़र ब ख़ुदा है न कि नज़र ब ग़ैर ।(3) व लिहाज़ा ख़ुद क़ुरआने अ़ज़ीम ने इस का हुक्म दिया, जिस का ज़िक्र अदब 22 में आता है । इस की नज़ीर तवाज़ोअ़ है (इस की मिसाल बुज़ुर्गों की ता'ज़ीम व तौक़ीर वाला मस्अला है) उ़-लमाए किराम फ़रमाते हैं : ग़ैरे ख़ुदा के लिये तवाज़ोअ़ ह़राम है ।

---

❶ अपने दिल व ज़ुबान और अपने ज़ाहिर व बातिन को एक सा करे कि जो ज़ुबान से मांगे दिल भी उसी की त़रफ़ मु-तवज्जेह हो और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा सब से उम्मीद मुन्क़त़ेअ़ कर के अपनी उम्मीद गाह सिर्फ़ उसी की ज़ात को बनाए और मुराद बर आने तक अपनी इसी कैफ़िय्यत को बर क़रार रखे ।

❷ ग़ैरे ख़ुदा को मुईन व मददगार मानना इस त़रह़ कि वोही मुईन व मददगार है "नज़र ब ग़ैर" कहलाता है और अगर ह़क़ी-क़तन उसी ग़ैरे ख़ुदा को बिज़्ज़ात (या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा के बिग़ैर) ह़क़ीक़ी मुराद और मक़्सूदे अस्ली समझ कर अपना मुईन व मददगार माने तो येह खुला कुफ़्रो शिर्क है, या यूं समझें कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा ग़ैरों से मदद मांगना "नज़र ब ग़ैर" है, चुनान्चे अगर येह अ़क़ीदा रखे कि ग़ैर ही बिज़्ज़ात (या'नी अल्लाह की अ़त़ा के बिग़ैर) अज़ ख़ुद देने वाला है तो येह अ़क़ीदा यक़ीनी त़ौर पर कुफ़्रो शिर्क है । हां अलबत्ता ! अल्लाह के नेक बन्दों से तवस्सुल या'नी उन को अपना वसीला बनाना येह "नज़र ब ग़ैर" है ही नहीं, जिस की तफ़्सील ख़ुद आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه बयान फ़रमा रहे हैं ।

1. **फ़ाइदए जलीला :** इस्तिआ़नत बिलग़ैर व तवस्सुल ब मह़बूबान का इम्तियाज़ ।

❸ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दों को अपनी ह़ाजत रवाई के लिये वसीला बनाना दर ह़क़ीक़त अल्लाह तआ़ला ही से मांगना है न कि किसी और से ।

''फ़तावा हिन्दिय्या'' व ''मुल्तक़त़'' वग़ैरहुमा में है : ''اَلتَّوَاضُعُ لِغَيْرِ اللّٰهِ حَرَامٌ''.[1] हालां कि मुअ़ज़्ज़माने दीन के लिये तवाज़ोअ़ क़त़्अ़न मामूर बिही है (या'नी दीनी पेश्वाओं की ता'ज़ीम का हुक्म तो यक़ीनी त़ौर पर दिया गया है) ख़ुद येही उ़-लमा इस का हुक्म देते हैं। ह़दीस में है :

((تواضعوا لمن تعلّمون منه وتواضعوا لمن تعلّمونه ولا تكونوا جبابرة العلماء)).[2]

''अपने उस्ताद के लिये तवाज़ोअ़ करो और अपने शागिर्दों के लिये तवाज़ोअ़ करो और सरकश आ़लिम न बनो।''

नीज़ ह़दीस शरीफ़ में इर्शाद हुवा : ''जो किसी ग़नी के लिये उस के ग़िना के सबब तवाज़ोअ़ करे, ''ذَهَبَ ثُلُثَا دِيْنِهٖ'' उस का दो तिहाई दीन जाता रहे।''[3]

तो वजह वोही है कि माले दुन्या के लिये तवाज़ोअ़ (आ़जिज़ी व इन्किसारी) रू ब ख़ुदा नहीं येह ह़राम हुई और येही तवाज़ोअ़ **लि ग़ैरिल्लाह** है और इल्मे दीन के लिये तवाज़ोअ़ रू ब ख़ुदा है, इस का हुक्म आया, और येह ऐन तवाज़ोअ़ लिल्लाह है। येह नुक्ता हमेशा याद रखने का है कि इसी को भूल कर वहाबिया व मुश्रिकीन इफ़्रात़ो तफ़्रीत़ में पड़े।[4] ﴿والعياذ بالله ربّ العالمين.

---

1 "الفتاوى الهندية"، كتاب الكراهية، الباب الثامن والعشرون، ج٥، ص٣٦٨.
و"الدر المختار"، كتاب الحظر والإباحة، باب الاستبراء وغيره، ج٩، ص٦٣٢.

2 "فيض القدير"، الحديث: ٣٣٨١، ج٣، ص٣٦٠.
و"شعب الإيمان"، الحديث: ١٧٨٩، ج٢، ص٢٨٧.

3 "شعب الإيمان"، الحديث: ١٠٠٤٣، ج٧، ص٢١٣.

4 (तो वजह वोही है.....) से मुराद येह है कि जिस त़रह़ किसी मुअ़ज़्ज़मे दीनी की ता'ज़ीम तवाज़ोअ़ लि ग़ैरिल्लाह नहीं =

अदब 15 : निगाह नीची रखे, वरना مَعَاذَاللہ ज़वाले बसर का ख़ौफ़ है (या'नी नज़र कमज़ोर हो जाने का अन्देशा है) ।

قال الرضاء : येह अगर्चे ह़दीस में दुआ़ए नमाज़ के लिये वारिद, मगर उ़-लमा इसे आ़म फ़रमाते हैं ।﴿

= है क्यूं कि ह़दीसे पाक में इस का हुक्म दिया गया है तो येह तवाज़ोअ़ ख़ुदा के लिये हुई इसी त़रह़ अल्लाह के नेक बन्दों से तवस्सुल दर ह़क़ीक़त अल्लाह ही से मांगना है न कि ग़ैरुल्लाह से मांगना क्यूं कि क़ुरआनो ह़दीस में कई जगह इन बुज़ुर्गों से तवस्सुल का हुक्म दिया गया है लिहाज़ा येह हुक्मे क़ुरआनी पर अ़मल हुवा येह नुक्ता हमेशा याद रखने का है कि इस नुक्ते को वहाबियों और मुश्रिकों ने भुला दिया, चुनान्चे नसारा तो इस क़दर बढ़े कि उन्हों ने ह़ज़रते ईसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की शान में इस क़दर ग़ुलू (मुबा-लग़ा) किया कि उन्हें उस ﴿لَمْ یَلِدْ وَلَمْ یُوْلَدْ﴾ की शान वाली पाक ज़ात का बेटा कहने लगे और इधर वहाबियों, देव बन्दियों ने इस क़दर आ़जिज़ व लाचार समझा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की शान में गुस्ताख़ियां कर बैठे ।

करे मुस्त़फ़ा की इहानतें खुले बन्दों उस पे येह ज़ुरअतें
कि मैं क्या नहीं हूं मुह़म्मदी ! अरे हां नहीं, अरे हां नहीं

("ह़दाइक़े बख़्शिश", स. 80, मत़्बूआ़ मक-त-बतुल मदीना)

ज़िक्र रोके फ़ज़्ल काटे नक़्स का जोयां रहे
फिर कहे मरदक कि हूं उम्मत रसूलुल्लाह की

("ह़दाइक़े बख़्शिश", स. 111, मत़्बूआ़ मक-त-बतुल मदीना)

(मरदक : ज़लील व घटिया आदमी को कहते हैं) ।

मह़फ़ूज़ सदा रखना शहा बे अ-दबों से
और मुझ से भी सरज़द न कभी बे अ-दबी हो

("अर मुग़ाने मदीना", स. 64, मत़्बूआ़ मक-त-बतुल मदीना)

अदब 16 : दुआ़ के लिये अव्वल व आखि़र ह़म्दे इलाही बजा लाए कि अल्लाह तआ़ला से ज़ियादा कोई अपनी ह़म्द को दोस्त रखने वाला नहीं, थोड़ी ह़म्द पर बहुत राज़ी होता और बे शुमार अ़त़ा फ़रमाता है।

ह़म्द का मुख़्तसर व जामेअ़ कलिमा :

((لَا أُحْصِي ثَنَاءً عَلَيْكَ أَنْتَ كَمَا أَثْنَيْتَ عَلٰى نَفْسِكَ))(1)

और ((اَللّٰهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ كَمَا تَقُوْلُ وَخَيْرًا مِّمَّا نَقُوْلُ))(2) है

((اَللّٰهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ حَمْدًا يُّوَافِيْ نِعَمَكَ وَيُكَافِئُ مَزِيْدَ كَرَمِكَ))(3) यूंही **: قال الرضاء** वग़ैरा ज़ालिक कि अह़ादीस में वारिद।

अदब 17 : अव्वल व आखि़र नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم और इन के आल व अस्ह़ाब पर दुरूद भेजिये कि दुरूद अल्लाह तआ़ला की बारगाह में मक़्बूल है और परवर्द गारे करीम इस से बरतर कि अव्वल व आखि़र को क़बूल फ़रमाए और वस्त़ (दरमियान) को रद कर दे।

अमीरुल मुअमिनीन उ़मर رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ की ह़दीस में है : "दुआ़ ज़मीन व आस्मान के दरमियान रोकी जाती है जब तक तू अपने नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद न भेजे बुलन्द नहीं होने पाती।"(4)

---

1. या'नी मैं तेरी ह़म्दो सना ऐसी नहीं कर सका जैसी ह़म्दो सना तू खु़द अपने लिये करता है।
("صحيح مسلم"، كتاب الصلاة، باب ما يقال في الركوع والسجود، الحديث: ٤٨٦، ص٢٥٢)
2. ऐ अल्लाह ! तेरे ही लिये ह़म्दो सताइश है जैसा कि तू खु़द फ़रमाए और इस से बेहतर है जो हम कहें।
("سنن الترمذي"، كتاب الدعوات، باب ما جاء في عقد التسبيح، الحديث: ٣٥٣١، ج٥، ص٣٠٩)
3. ऐ रब हमारे ! सारी ख़ूबियां तुझी को कि तेरी ने'मतों के बदले और तेरे मज़ीद इन्आ़मात के मुक़ाबले में हों। ("الترغيب والترهيب"، الحديث: ٢٤٣٦، ج٢، ص٢٨٨، بألفاظ متقاربة)
4. "سنن الترمذي"، كتاب الوتر، باب ما جاء في فضل الصلاة على النبي صلى الله تعالى عليه وسلم، الحديث: ٤٨٦، ج٢، ص٢٩.

قال الرضاء : बल्कि बैहक़ी व अबुश्शैख़ सय्यिदुना अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ से रावी हुज़ूर सय्यिदुल मुर-सलीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : (1) ((الدعاء محجوب عن الله حتى يصلّى على محمّد وأهل بيته)).

"दुआ़ अल्लाह तआ़ला से ह़िजाब में है जब तक मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और इन के अहले बैत पर दुरूद न भेजी जाए।"

ऐ अ़ज़ीज़ ! दुआ़ त़ाइर है और दुरूद शहपर, त़ाइरे बे पर क्या उड़ सकता है !(2)

अदब 18 : अब कि मांगने का वक़्त आया, तसव्वुरे अ़-ज़-मतो जलाले इलाही में डूब जाए (या'नी : अल्लाह तआ़ला की अ़-ज़-मतो शान के तसव्वुर में गुम हो जाए)।

قال الرضاء : अगर इस मुबारक तसव्वुर ने वोह ग़-लबा किया कि ज़ुबान बन्द हो गई तो سُبْحٰنَ اللّٰه ! येह ख़ामोशी हज़ार अ़र्ज़ से ज़ियादा काम देगी वरना इस क़दर तो ज़रूर कि मूरिसे ह़या व अदब व ख़ुज़ूअ़ व ख़ुशूअ़ होगा (या'नी येह ज़ुबान का ख़ामोश होना ह़या व अदब और ज़ाहिर व बात़िन से उस की बारगाह में ह़ाज़िरी का बाइ़स होगा) कि येही रूहे़ दुआ़ है दुआ़ बे इस के तने बे जान (बे जान जिस्म) और तने बे जान से उम्मीद जहालत।

---

1 "كنز العمال"، كتاب الأذكار، الحديث: ٣٢١٢، ج١، الجزء الثاني، ص٣٥، (بحوالہ ابوالشیخ).
و"شعب الإيمان"، باب في تعظيم النبي صلى الله تعالى عليه وسلم وإجلاله وتوقيره، الحديث: ١٥٧٦، ج٢، ص٢١٦، بتصرف قليل.

2 परिन्दे के बाज़ू का सब से बड़ा पर कि जिस के बिग़ैर कोई परिन्दा परवाज़ नहीं कर सकता उसे शहपर कहा जाता है। या'नी दुआ़ एक परिन्दा और दुरूदे पाक उस के शहपर की मानिन्द है लिहाज़ा ऐसा परिन्दा जिस का शहपर ही न हो वोह क्या उड़ेगा ऐसे ही वोह दुआ़ जो दुरूदे पाक से ख़ाली हो क्यूंकर मक़्बूल हो सकती है !

अदब 19 : अल्लाह तआ़ला की अ़ज़ीम रह़मतों को, जो बा वुजूदे गुनाह, इस के ह़ाल पर फ़रमाता रहा, याद कर के शरमिन्दा हो।

قال الرضاء : येह शर्म बाइ़से दिल शिकस्तगी होगी और अल्लाह तआ़ला दिले शिकस्ता से बहुत क़रीब है। ह़दीसे क़ुदसी में है : ((أنا عند المنكسرة قلوبُهم لأجلي))[1] और नीज़ तसव्वुरे रह़मत जुरअते अ़र्ज़ पर बाइ़स होगा।

((ومن فتحت له أبواب الدعاء فتحت له أبواب الإجابة))[2].

''जिस के लिये दुआ़ के दरवाज़े खुलते हैं, इजाबत (क़बूलिय्यत) के दरवाज़े भी खुल जाते हैं।''

अदब 20 : अल्लाह جَلَّ جَلَالُهُ की क़ुदरते कामिला और अपने इ़ज्ज़ो एह़तियाज पर नज़र करे कि मूजिबे इल्ह़ाह़ो ज़ारी है (या'नी गिर्या व ज़ारी का बाइ़स है)।

अदब 21 : शुरूअ़ में अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ को उस के मह़बूब नामों से पुकारे। रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : ''अल्लाह तआ़ला ने इस्मे पाक ''अर-ह़मुर्राह़िमीन'' पर एक फ़िरिश्ता मुक़र्रर फ़रमाया है कि जो शख़्स इसे तीन बार कहता है, फ़िरिश्ता निदा करता है : मांग कि ''अर-ह़मुर्राह़िमीन'' तेरी त़रफ़ मु-तवज्जेह हुवा।''[3]

---

1. या'नी : मैं टूटे दिल वालों के पास हूं।
("فيض القدير"، حرف الهمزة، تحت الحديث: ١٠٥٥، ج١، ص٦٦٣، بألفاظ متقاربة)

2. "المصنف" لابن أبي شيبة، كتاب الدعاء، في فضل الدعاء، الحديث: ٢، ج٧، ص٢٣، بألفاظ متقاربة.

3. "المستدرك"، كتاب الدعاء والتكبير...إلخ، باب إنّ للّٰه ملكاً موكلاً ... إلخ، الحديث: ٢٠٤٠، ج٢، ص٢٣٩.

और पांच बार ''या रब्बना'' कहना भी निहायत मुअस्सिरे इजाबत है (या'नी दुआ की क़बूलिय्यत में बहुत असर रखता है)। क़ुरआने मजीद में इस लफ़्ज़े मुबारक को पांच बार ज़िक्र कर के इस के बा'द इर्शाद फ़रमाया : ﴿فَاسْتَجَابَ لَهُمْ رَبُّهُمْ﴾ ''तो उन की दुआ क़बूल की उन के रब ने।''

(پ٤، ال عمران: ١٩٥)

इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मन्क़ूल है : ''जो शख़्स इज़्ज़ के वक़्त पांच बार ''या रब्बना'' कहे, अल्लाह तआ़ला उसे उस चीज़ से जिस का ख़ौफ़ रखता है, अमान बख़्शे और जो चीज़ चाहता है, अ़ता फ़रमाए फिर येह आयतें तिलावत कीं : ﴿رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هٰذَا بَاطِلًا﴾ إلى قوله تعالى: ﴿اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيْعَادَ﴾ (پ٤، ال عمران: ١٩١-١٩٤)[1] और अस्माए हुस्ना का फ़ज़्ल ख़ुद पोशीदा नहीं।'' (या'नी अल्लाह तआ़ला के मुबारक नामों की फ़ज़ीलत और इन की ब-र-कत तो ज़ाहिर ही है)।

अदब 22 : अल्लाह तआ़ला के अस्मा व सिफ़ात और उस की किताबों ख़ुसूसन क़ुरआन और मलाएका व अम्बियाए किराम बिल ख़ुसूस हुज़ूर सय्यिदुल अनाम عَلَيْهِ وَعَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ और उस के औलिया व अस्फ़िया बित्तख़्सीस (ख़ुसूसन) हुज़ूर ग़ौसे आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُم से तवस्सुल और इन्हें अपने इन्जाहे़ ह़ाजात का ज़रीआ़ करे (या'नी : इन तमाम को अपनी ह़ाजात के पूरा होने के लिये वसीला बनाए) कि मह़बूबाने ख़ुदा के वसीले से दुआ़ क़बूल होती है।

قال الرضاء: قال اللّٰه تعالى: ﴿وَابْتَغُوْٓا اِلَيْهِ الْوَسِيْلَةَ﴾

''अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ वसीला ढूंडो।'' (پ٦، المائدة: ٣٥)

---

1 "روح المعاني"، پ ٣، آل عمران، تحت الآية: ١٩٤، ج٢، الجزء٤، ص٥١٢.
و"الجامع لأحكام القرآن" للقرطبي، ج٢، الجزء الرابع، ٢٤٤.

सह़ीह़ ह़दीस में नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने ता'लीम फ़रमाया कि यूं दुआ़ की जाए :

((اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَسْئَلُکَ وَأَتَوَجَّهُ إِلَيْکَ بِنَبِيِّکَ مُحَمَّدٍ نَّبِيِّ الرَّحْمَةِ يَا مُحَمَّدُ إِنِّيْ تَوَجَّهْتُ بِکَ إِلٰى رَبِّيْ فِي حَاجَتِيْ هٰذِهٖ لِتُقْضٰى لِيْ)).[1]

"इलाही मैं तुझ से मांगता और तेरी त़रफ़ तवज्जोह करता हूं तेरे नबी मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के वसीले से जो मेह्रबानी के नबी हैं, या रसूलल्लाह ! मैं ने हुज़ूर के वसीले से अपने रब की त़रफ़ तवज्जोह की अपनी इस ह़ाजत में कि मेरे लिये पूरी हो।"

"सह़ीह़ बुख़ारी" में है, अमीरुल मुअमिनीन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ ने दुआ़ की : إنّا نتوسّل إليک بعمّ نبينا صلى الله عليه وسلم فاسقنا.[2]

"इलाही ! हम तेरी त़रफ़ तवस्सुल करते हैं, अपने नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के चचा अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से कि बाराने रह़मत भेज।"

---

1 "سنن الترمذي"، كتاب الدعوات، الحديث: ٣٥٨٩، ج٥، ص٣٣٦.

و"المسند" للإمام أحمد بن حنبل، الحديث: ١٧٢٤٠، ج٦، ص١٠٧.

नोट : ह़दीसे पाक में **"या मुह़म्मद"** है। मगर इस की जगह **"या रसूलल्लाह"** कहना चाहिये कि सह़ीह़ मज़हब में हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم को नाम ले कर निदा करना ना जाइज़ है। उ़-लमा फ़रमाते हैं : अगर रिवायत में वारिद हो जब भी तब्दील कर लें। येह मस्अला मुजद्दिदे आ'ज़म इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ के रिसाला : **"تجلي اليقين بأنّ نبينا سيد المرسلين"** में मुफ़स्सल व मुशर्रह़ मज़्कूर है।

(انظر للتفصيل "الفتاوى الرضوية"، ج٣٠، ص١٥٧.)

2 "صحيح البخاري"، كتاب فضائل أصحاب النبي صلى الله تعالى عليه وسلم، باب ذكر العباس بن عبد المطلب رضي الله عنه، الحديث: ٣٧١٠، ج٢، ص٥٣٧.

हुज़ूरे ग़ौसे आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं :

"من استغاث بي في كربة كشفت عنه ومن نادى باسمي في شدة فرجت عنه ومن توسّل بي في حاجة قضيت له."[1]

''जो किसी तक्लीफ़ में मुझ से मदद मांगे वोह तक्लीफ़ दूर हो और जो किसी सख़्ती में मेरा नाम ले कर पुकारे वोह सख़्ती दफ़्अ़ हो और जो किसी ह़ाजत में मुझे वसीला करे, वोह ह़ाजत रवा हो।''

और फ़रमाते है : ''إذا سألتم اللّٰه فاسئلوا بي.''[2]

''जब तुम अल्लाह तआ़ला से सुवाल करो तो मेरे वसीले से मांगो, तुम्हारी मुराद पूरी होगी।''

येह मज़ामीन ब असानीदे सह़ीह़ा (या'नी सह़ीह़ स-नदों से) इस जनाब से अइम्मए दीन व अकाबिरे मोअ़-त-मदीन ने रिवायत फ़रमाए।

अदब 23 : अपनी उ़म्र में जो नेक अ़मल ख़ालिसन लि वज्हिल्लाह हुवा हो, उस से तवस्सुल करे कि जालिबे रह़मत है (या'नी रह़मते इलाही का सबब है)।

قال الرضاء : क़िस्सए अस्ह़ाबिर्रक़ीम इस पर दलीले काफ़ी।[3]

अदब 24 : ब कमाले अदब हाथ आस्मान[1] की त़रफ़ उठा

---

1 "بهجة الأسرار"، ذكر فضل أصحابه و بشراهم، ص١٩٧.

2 "بهجة الأسرار"، ذكر كلمات أخبربها عن نفسه محدثا... إلخ، ص ٤٥.

3 ''सह़ीह़ बुख़ारी शरीफ़'' वग़ैरा में अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी कहते हैं कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से सुना कि फ़रमाते हैं : ''अगले ज़माने के तीन शख़्स कहीं जा रहे थे सोने के वक़्त एक ग़ार के पास पहुंचे उस में येह तीनों शख़्स दाख़िल हो गए पहाड़ की एक चट्टान ऊपर से गिरी जिस ने ग़ार को बन्द कर दिया उन्हों ने कहा : अब =

= इस से नजात की कोई सूरत नहीं बजुज़ इस के कि तुम ने जो कुछ नेक काम किया हो उस के ज़रीए से अल्लाह से दुआ करो, एक ने कहा : ऐ अल्लाह ! मेरे वालिदैन बहुत बूढ़े थे जब मैं जंगल से बकरियां चरा कर लाता तो दूध दोह कर सब से पहले उन को पिलाता उस से पहले न अपने बाल बच्चों को पिलाता न लौंडी ग़ुलाम को देता एक दिन मैं जंगल में दूर चला गया रात में जानवरों को ले कर ऐसे वक़्त आया कि वालिदैन सो गए थे मैं दूध ले कर उन के पास पहुंचा तो वोह सोए हुए थे बच्चे भूक से चिल्ला रहे थे मगर मैं ने वालिदैन से पहले बच्चों को पिलाना पसन्द न किया और येह भी पसन्द न किया कि उन्हें सोते से जगा दूं दूध का पियाला हाथ पर रखे हुए उन के जागने के इन्तिज़ार में रहा यहां तक कि सुब्ह़ चमक गई और वोह जागे और दूध पिया, ऐ अल्लाह ! अगर मैं ने येह काम तेरी ख़ुशनूदी के लिये किया है तो इस चट्टान को कुछ हटा दे उस का कहना था कि चट्टान कुछ सरक गई मगर इतनी नहीं हटी कि येह लोग ग़ार से निकल सकें, दूसरे ने कहा : ऐ अल्लाह ! मेरे चचा की एक लड़की थी जिस को मैं बहुत मह़बूब रखता था मैं ने उस के साथ बुरे काम का इरादा किया उस ने इन्कार कर दिया वोह क़ह़त़ की मुसीबत में मुब्तला हुई मेरे पास कुछ मांगने को आई मैं ने उसे एक सो बीस[120] अश्रफ़ियां दीं कि मेरे साथ ख़ल्वत करे वोह राज़ी हो गई जब मुझे उस पर क़ाबू मिला तो बोली कि ना जाइज़ त़ौर पर इस मोहर का तोड़ना तेरे लिये ह़लाल नहीं करती । उस काम को गुनाह समझ कर मैं हट गया और अश्रफ़ियां जो दे चुका था वोह भी छोड़ दीं, इलाही ! अगर येह काम तेरी रिज़ा जूई के लिये मैं ने किया है तो इस को हटा दे उस के कहते ही चट्टान कुछ सरक गई मगर इतनी नहीं हटी कि निकल सकें, तीसरे ने कहा : ऐ अल्लाह ! मैं ने चन्द शख़्सों को मज़दूरी पर रखा था उन सब को मज़दूरियां दे दीं एक शख़्स अपनी मज़दूरी छोड़ कर चला गया उस की मज़दूरी को मैं ने बढ़ाया या'नी उस से तिजारत वग़ैरा कोई ऐसा काम किया जिस से उस में इज़ाफ़ा हुवा उस को बढ़ा कर मैं ने बहुत कुछ कर लिया वोह एक ज़माने के बा'द आया और कहने लगा : ऐ ख़ुदा के बन्दे ! मेरी मज़दूरी मुझे दे दे, मैं ने कहा : येह जो कुछ ऊंट, गाय, बैल, बकरियां ग़ुलाम तू देख रहा है येह सब तेरी ही मज़दूरी का है सब ले ले, बोला : ऐ बन्दए ख़ुदा ! मुझ से मज़ाक़ न कर मैं ने कहा : मज़ाक़ नहीं करता हूं येह सब तेरा ही है ले जा वोह सब कुछ ले कर चला गया, इलाही ! अगर येह काम मैं ने तेरी रिज़ा के लिये किया है तो इसे हटा दे वोह पथ्थर हट गया येह तीनों =

कर सीने या शानों या चेहरे के मुक़ाबिल लाए या पूरे उठाए यहां तक कि बग़ल की सपेदी ज़ाहिर हो, येह इब्तिहाल है (या'नी गिर्या व ज़ारी के साथ दुआ़ करना है) ।

अदब 25 : हथेलियां फैली रखे ।

قال الرضاء : या'नी उन में ख़म न हो कि आस्मान क़िब्लए दुआ़ है, सारी कफ़े दस्त मुवा-ज-हए आस्मान रहे ।(1)﴾

= उस ग़ार से निकल कर चले गए ।

("صحيح البخاري"، كتاب الإجارة، باب من استأجر أجيرا... إلخ، الحديث: ٢٢٧٢، ج٢ ،ص٦٧.)

इमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने भी मज़्कूरा क़िस्से को मुख़्तसरन "फ़तावा र-ज़विय्या" जिल्द 23 के सफ़हा 539, 540 पर बयान फ़रमाया है ।

1. बा'ज़ अहादीस से मुस्तफ़ाद कि त़-लबे ने'मत की दुआ़ हो तो कफ़े दस्त (हथेली) सूए आस्मान करे और रद्दे बला की तो पुश्ते दस्त । मगर "अबू दावूद" वग़ैरा की ह़दीस में है कि पुश्ते दस्त से दुआ़ न करो और बा'ज़ अवक़ात दुआ़ के वक़्त सिर्फ़ अंगुश्ते शहादत से इशारा भी आया और इमाम मुह़म्मद बिन ह़-नफ़िय्या से मन्क़ूल कि दुआ़ चार क़िस्म है :

अव्वल : दुआ़ए रग़बत (या'नी किसी चीज़ के ह़ुसूल की दुआ़), इस में बत़्ने कफ़ (हथेली का पेट) जानिबे आस्मान हो ।

दुवुम : दुआ़ए रहबत (या'नी किसी चीज़ से बचने की दुआ़), इस में पुश्ते दस्त अपने चेहरे की त़रफ़ हो ।

सिवुम : दुआ़ए तज़र्रोअ़ (या'नी गिड़-गिड़ाने वाली दुआ़), इस में **ख़िन्सर** व **बिन्सर** (छुंगलिया और इस के बराबर वाली उंगली) बन्द और वुस्त़ा व इब्हाम (दरमियानी उंगली और अंगूठा) का ह़ल्क़ा कर के **मुसब्बह़ा** (शहादत की उंगली) से इशारा करे ।

चहारुम : दुआ़ए ख़ुफ़्या कि बन्दा सिर्फ़ दिल से अ़र्ज़ करे, ज़बान न हिलाए ।

("البحر الرائق"، كتاب الصلاة، باب الوتر والنوافل، ج٢، ص٧٧). ١٢منه قُدِّسَ سِرُّهٗ وَاللّٰهُ تَعَالٰى اَعْلَم

❶ या'नी उंग्लियों समेत पूरी हथेली आस्मान की त़रफ़ रहे ।

बक़िय्या दुआ़ क़बूल होने के अस्बाब जानने के लिये फ़ज़ाइले दुआ़ क़िस्त़ नम्बर 2 बनाम "दुआ़ मांगने के 34 आदाब" का मुत़ालआ़ कीजिये ।